लेखक परिचय

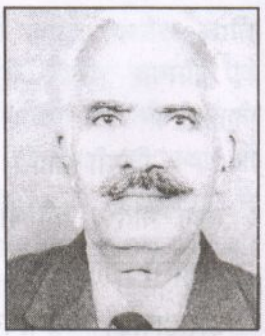

1.	नाम	– नन्दलाल दशोरा
2.	पिता का नाम	– मेघश्याम जी दशोरा
3.	मूल निवास	– सांवता (चित्तौड़गढ़)
4.	जन्म दिनांक	– 9 नवम्बर 1926
5.	वर्तमान निवास	– 162,नवरतन कॉम्पलेक्स, बेदला रोड फतहपुरा,उदयपुर (राज.) फोन (0294) 2450441
6.	शैक्षिक योग्यता	– एम.ए.(भूगोल) सी.टी., बी.एड., विशारद, साहित्य रत्न (पूर्वार्द्ध)
7.	पद व व्यवसाय	– सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक माध्यमिक विद्यालय, उप जिला शिक्षा अधिकारी
8.	कार्यक्षेत्र	– उदयपुर, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर व अफ्रीका (इथियोपिया)
9.	अन्य प्रशिक्षण	– जनरल साइन्स, बुनियादी शिक्षा, ए.सी.सी., नेशनल वालिन्टियर फोर्स, जूनियर रॅड क्रॉस, फर्स्ट एड, योग शिक्षा, रेकी चिकित्सा। स्काउटिंग में – कब मास्टर, स्काउट मास्टर, रोवर लीडर, हिमालया वुड बैज, वुड क्राफ्ट प्राप्त।
10.	पद एवं कार्य	– इथियोपिया (अफ्रीका) में तीन वर्ष भूगोल शिक्षक, स्काउटिंग में स्काउट मास्टर, जिला स्काउट मास्टर, डिविजनल ट्रेनर, सहायक स्टेट ऑरगेनाईजिंग कमिशनर के पद पर कार्य। ए.सी.सी. ऑफिसर, उदयपुर दशोरा समाज का अध्यक्ष, रेकी चिकित्सक। चुनावों में प्रिसाइडिंग ऑफिसर व जॉनल मजिस्ट्रेट का कार्य। थियोसोफी मेंसचिव।
11.	सदस्य	– शान्ति कुंज हरिद्वार, गायत्री शक्ति पीठ, थियोसोफिकल सोसायटी, आनन्दमार्ग, ब्रह्मा कुमारी, वाराणसी में थियोसोफिकल सोसायटी में अपनी सेवाएं दी।
12.	प्रशंसा/सम्मान/पुरस्कार	– स्काउटिंग में राष्ट्रीय स्तर पर हिमालया वुड वैज प्राप्त, राज्य स्तर पर दीर्घ सेवा पदक प्राप्त, पंचवर्षीय योजना में राज्य स्तर पर सम्मान प्राप्त। विद्यालयी पत्रिका के प्रकाशन में दो बार राज्य

स्तर पर प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर प्रशस्ति पत्र प्राप्त खंडवा में दशोरा समाज द्वारा सम्मानित। इथियोपिया सरकार द्वारा प्रशंसा पत्र प्राप्त। वरिष्ठ नागरिक का सम्मान प्राप्त।

13. लेखन/सम्पादन – अध्यात्म, वेदान्त दर्शन, सांख्य, योग, धर्म, सम्प्रदाय, उपनिषद्, खगोल, ध्यान योग चिकित्सा, रेकी चिकित्सा तथा दशोरा जाति पर कुल 54 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। जो इस जाति में गत 700 वर्षों में एक कीर्तिमान है। ये सभी पुस्तकें इन्होंने अपनी सेवा निवृति (1981) के बाद ही लिखी है। विद्यालयी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है। अध्यात्म व धर्म विषय पर इनकी कई वार्ताएं हो चुकी है। कल्याण, नवजीवन, जन शिक्षण आदि में इनके लेख व कविताएं प्रकाशित हो चुकी है।

14. अभिरूचियां – फुटबॉल, बॉलीबॉल, हॉकी, कबड्डी व केरम के अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। भ्रमण, देशाटन, फोटोग्राफी, अध्ययन, लेखन, इनके मुख्य रूचिकर विषय रहे है। सम्पूर्ण भारत, नेपाल, इंथियोपिया, अदन व यमन की यात्राएँ कर चुके है। रंगीन स्लाइड्स, व फोटो का अच्छा संग्रह है। पुस्तकों की एक अच्छी लाइब्रेरी है।

OOOOOOOOO

स्वर्ण वाक्य

- ❑ विनय प्रदर्शन करने से मनुष्य छोटा नहीं होता, बड़ा होता है। (आनन्द वचनामृत)
- ❑ बुद्धिमान की डाँट सुनना, मूर्खों के गीत सुनने से उत्तम है। (बाईबल)
- ❑ समझदार मनुष्य ज्ञान को छिपाये रखता है, परन्तु मूर्ख अपने हृदय की मूर्खता का प्रचार करता है। (सुलेमान)
- ❑ चार तरह के इन्सानों की चार तरह के इन्सानों से दुश्मनी होती है– डाकू की बादशाह से, चोर की चोकीदार से, दुराचारी की चुगलखोर से, और वैश्या की कोतवाल से। (शेखसादी)
- ❑ पुरूषार्थी व्यक्ति कभी दुःखी नही रह सकता तथा आलसी व अकर्मण्य व्यक्ति कभी सुखी नही रह सकता। (अज्ञात)